J.P.S.

NH-16, Gangapada, Khurda

2025-26

प्रकरण - रहीम के दोहे

विपिन कुमार यादव

{टी. जी. टी.
हिंदी विभाग}

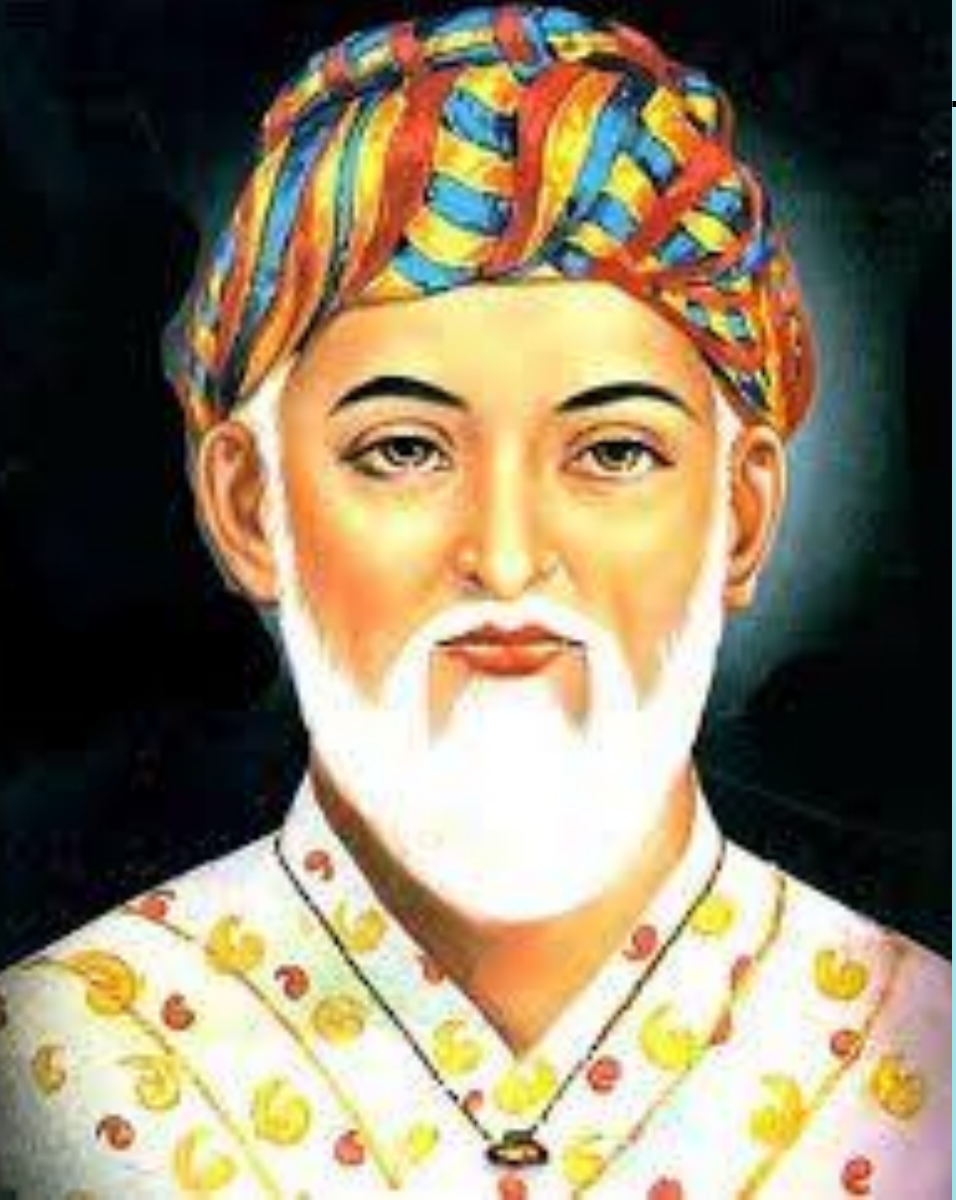

कवि परिचय:

जन्म: 1556 इसवी में

जन्म स्थान :लाहौर (अब पाकिस्तान में)

पूरा नाम: अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना

भाषा का ज्ञान : हिंदी, अरबी, फ़ारसी, और संस्कृत

दरबारी कवि: अकबर के

मृत्यु: 1626

रचनाएँ: रहीम सतसई, रहीम रत्नावली

पाठ में प्रवेश

प्रस्तुत पाठ में रहीम के नीतिपरक दोहे दिए गए हैं। यहाँ दिया गया हर एक दोहा हमारे जीवन की किसी न किसी स्थिति से जुड़ा हुआ है। ये दोहे जहाँ एक ओर इन्हें पढ़ने वालों को औरों के साथ कैसा बरताव करना चाहिए, कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसकी शिक्षा देते हैं, वहीं मानव मात्र को करणीय अर्थात करने योग्य और अकरणीय अर्थात न करने योग्य आचरण या व्यवहार की भी नसीहत यानि सीख देते हैं। इन दोहों को एक बार पढ़ लेने के बाद भूल पाना संभव नहीं है और हमारे जीवन की विभिन्न स्थितियों का सामना होते ही इनका किसी को भी याद आना लाज़िमी है, जिनका इनमें चित्रण है।

पाठ का सार

रहीम के ग्यारह दोहे जीवन के महत्वपूर्ण पाठ सिखाते हैं। पहला दोहा कहता है कि प्यार का रिश्ता धागे की तरह होता है, जिसे आसानी से नहीं तोड़ना चाहिए। दूसरा दोहा बताता है कि दुख छुपाना बेहतर है, क्योंकि दूसरों को बताने पर मजाक बन सकता है। तीसरा दोहा कहता है कि एक समय में एक ही काम पर ध्यान देना चाहिए।
चौथा दोहा बताता है कि मुश्किल समय में हम सही जगह पर जाते हैं, जैसे राम चित्रकूट गए थे। पाँचवां दोहा कहता है कि कम शब्दों में भी गहरा अर्थ हो सकता है। छठा दोहा बताता है कि कीचड़ का पानी भी कीमती है क्योंकि वह जीवन के लिए जरूरी है।
सातवां दोहा कहता है कि मदद पाने पर आभार जताना चाहिए।
आठवां दोहा बताता है कि बिगड़ी हुई बात को सुधारना मुश्किल होता है। नौवां दोहा कहता है कि छोटी चीज़ों का भी महत्व है। दसवां दोहा बताता है कि कठिनाइयों में धन ही सहारा देता है। अंतिम दोहा पानी के उदाहरण से विनम्रता और जीवन के महत्व को दर्शाता है।

1

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय॥

शब्दार्थ : -

चटकाय – झटके से
परि जाय – पड़ जाती है
धागा – डोर

प्रसंग -: रहीम जी कहते हैं कि प्रेम का बंधन नाज़ुक धागे की तरह होता है, जिसे बिना कारण नहीं तोड़ना चाहिए। टूटने के बाद वह पहले जैसा नहीं जुड़ सकता।

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि प्रेम का बंधन धागे की तरह नाज़ुक होता है, जिसे बिना किसी मजबूत कारण के नहीं तोड़ना चाहिए। जैसे एक बार टूटे हुए धागे को जोड़ने पर उसमें गाँठ पड़ जाती है, वैसे ही किसी रिश्ते के टूटने के बाद उसे पहले जैसी मजबूती से दोबारा जोड़ना मुश्किल होता है। इसलिए रिश्तों को संभालकर रखना चाहिए और उन्हें निभाने में समझदारी दिखानी चाहिए।

2

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहै कोय॥

शब्दार्थ : -

निज – अपने
बिथा – दर्द
अठिलैहैं – मज़ाक उड़ाना
बाँटि – बाँटना
कोय – कोई

प्रसंग -: रहीम जी कहते हैं कि अपने दुखों को छुपाना बेहतर है, क्योंकि दूसरों को बताने पर वे मज़ाक बना सकते हैं। कोई भी आपके दर्द को सच में समझ या कम नहीं कर सकता।

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि अपने मन की पीड़ा या दर्द को दूसरों से छुपा कर ही रखना चाहिए। क्योंकि जब आपका दर्द किसी अन्य व्यक्ति को पता चलता है तो वे लोग उसका मज़ाक ही उड़ाते हैं। कोई भी आपके दर्द को बाँट नहीं सकता। अर्थात कोई भी व्यक्ति आपके दर्द को कम नहीं कर सकता।

3

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय॥

शब्दार्थ : -

साधे – साधना, ध्यान केंद्रित करना
सधै – सफल होते हैं, पूरा होता है
साधे – जो लोग ध्यान लगाते हैं
जाय – जाते हैं, सफल नहीं होते हैं
मूलहिं – जड़ में
सींचिबो – सिंचाई करना
अघाय – तृप्त/ संतुष्टि

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि एक बार में एक ही काम करना चाहिए, क्योंकि जब आप कई काम एक साथ करने की कोशिश करते हैं तो कोई भी ठीक से पूरा नहीं हो पाता। जैसे पौधे में फूल और फल तभी आते हैं जब उसकी जड़ को पर्याप्त पानी दिया जाता है। यही दिखाता है कि ध्यान और मेहनत एक ही लक्ष्य पर केंद्रित होनी चाहिए ताकि सफलता मिले।

4

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध-नरेस।
जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस॥

शब्दार्थ : -

रामि- रहना
अवध – रहने लायक न होना
बिपदा – विपत्ति
जा पर – जिस पर

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि जब राम को बनवास मिला था तो वे चित्रकूट में रहने गये थे। रहीम यह भी कहते हैं कि चित्रकूट बहुत घना व् अँधेरा वन होने के कारण रहने लायक जगह नहीं थी। परन्तु रहीम कहते हैं कि ऐसी जगह पर वही रहने जाता है जिस पर कोई भारी विपत्ति आती है। कहने का अभिप्राय यह है कि विपत्ति में व्यक्ति कोई भी कठिन-से-कठिन काम कर लेता है।

बोधात्मक ज्ञान परख प्रश्न

1. रहीम ने 'धागा प्रेम का' दोहे में प्रेम को धागे से क्यों तुलना की है? इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है?
2. 'निज मन की व्यथा' दोहे के अनुसार दूसरों से अपने दुख न कहने की सलाह क्यों दी गई है?
3. 'एकै साधे सब सधै' दोहे के माध्यम से रहीम एकाग्रता और प्राथमिकता पर
4. 'चित्रकूट में रमि रहे' दोहे में विपत्ति और साहस का क्या संबंध दर्शाया गया है?
5. रहीम के दोहों को पढ़कर आपके मन में उनके व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषताएँ उजागर होती हैं?

1. रहीम ने 'धागा प्रेम का' दोहे में प्रेम को धागे से क्यों तुलना की है? इससे हमें क्या शिक्षा मिलती है?

रहीम ने प्रेम को एक नाज़ुक धागे की तरह बताया है जो एक बार टूटने पर फिर से वैसा नहीं जुड़ता। इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रेम और रिश्तों को बहुत सावधानी और समझदारी से निभाना चाहिए। व्यर्थ के अहंकार या क्रोध के कारण संबंधों को तोड़ना नहीं चाहिए क्योंकि टूटे रिश्तों में गांठें पड़ जाती हैं।

2. 'निज मन की व्यथा' दोहे के अनुसार दूसरों से अपने दुख न कहने की सलाह क्यों दी गई है?

इस दोहे में रहीम कहते हैं कि अपने दुख दूसरों को बताने से वे सहानुभूति नहीं देते, बल्कि मज़ाक उड़ाते हैं। इसलिए हमें अपने मन की पीड़ा को स्वयं ही सहन करना चाहिए और धैर्य रखना चाहिए। इससे आत्मबल बढ़ता है और अपमान की संभावना नहीं रहती।

3. एकै साधे सब सधै' दोहे के माध्यम से रहीम एकाग्रता और प्राथमिकता पर क्या विचार प्रस्तुत करते हैं?

रहीम बताते हैं कि जब हम एक लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो बाकी कार्य भी स्वयं सफल हो जाते हैं। परंतु यदि हम अनेक कार्यों में एक साथ लगते हैं तो कोई भी ठीक से नहीं हो पाता। यह दोहा एकाग्रता और प्राथमिकता के महत्व को दर्शाता है।

4. ‘चित्रकूट में रमि रहे’ दोहे में विपत्ति और साहस का क्या संबंध दर्शाया गया है?

इस दोहे में रहीम बताते हैं कि कठिन समय में व्यक्ति वह सब करने को तैयार हो जाता है जो सामान्य स्थिति में असंभव लगता है। विपत्ति व्यक्ति की छुपी हुई शक्ति को बाहर निकालती है और वह कठिन परिस्थितियों का सामना कर पाता है। यह साहस का प्रतीक है।

5. रहीम के दोहों को पढ़कर आपके मन में उनके व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषताएँ उजागर होती हैं?

रहीम के दोहे पढ़कर पता चलता है कि वे एक संवेदनशील, अनुभवी और व्यवहारिक व्यक्ति थे। उनके दोहों में जीवन की सच्चाइयाँ और गहरी सीखें छिपी हैं। वे प्रेम, संयम, आत्मबल और एकाग्रता जैसे मूल्यों को महत्व देते थे। वे नीतिकवि थे जो अपने अनुभवों से जीवन दर्शन सिखाते थे।

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं॥

शब्दार्थ : -

अरथ – अर्थ
आखर- अक्षर, शब्द
थोरे – थोड़े, कम
नट- नृत्य करने वाला एक समुदाय
कुंडली- घुमावदार रेखा
सिमटि – संकुचित/छोटा

व्याख्या -: रहीम जी का कहना है कि उनके दोहों में भले ही कम अक्षर या शब्द हैं, परंतु उनके अर्थ बड़े ही गहरे और बहुत कुछ कह देने में समर्थ हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे कोई नट अपने करतब के दौरान अपने बड़े शरीर को सिमटा कर कुंडली मार लेने के बाद छोटा लगने लगने लगता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी के आकार को देख कर उसकी प्रतिभा का अंदाज़ा नहीं लगाना चाहिए।

6

धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

शब्दार्थ : –

धनि – धन्य
पंक – कीचड़
लघु – छोटा
जिय– जीवन
उदधि – सागर
पिआसो – प्यासा
पियत – पीते हैं
बड़ाई– अधिकता

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि कीचड़ में पाया जाने वाला वह थोड़ा सा पानी ही धन्य है क्योंकि उस पानी से न जाने कितने छोटे-छोटे जीवों की प्यास बुझती है। लेकिन वह सागर का जल बहुत अधिक मात्रा में होते हुए भी व्यर्थ होता है क्योंकि उस जल से कोई भी जीव अपनी प्यास नहीं बुझा पता। कहने का तात्पर्य यह है कि बड़ा होने का कोई अर्थ नहीं रह जाता यदि आप किसी की सहायता न कर सको।

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछू न देत॥

शब्दार्थ : -

नाद – स्वर, आवाज, गीत
रीझि – खुश होकर, आकर्षित होकर
तन – शरीर देत – देता है
मृग – मृग (हिरण) नर – पुरुष, मनुष्य
धन – धन देत – देता है
समेत – साथ में, मिलाकर अधिक – अधिक
रीझेहु – खुश होकर आकर्षित हुए
कछू – कुछ
देत – देता है

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि जैसे हिरण संगीत की ध्वनि से आकर्षित होकर अपना शरीर दे देता है, वैसे कुछ लोग प्रेम या आकर्षण से प्रभावित होकर सब कुछ दे देते हैं। लेकिन कुछ लोग केवल लेने वाले होते हैं, वे कभी बदले में कुछ नहीं देते। उनका कहना है कि हमें दूसरों से कुछ लेने के साथ-साथ बदले में भी कुछ देना चाहिए।

8

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

शब्दार्थ : -

बिगरी – बिगड़ी
फाटे दूध – फटा हुआ दूध
मथे – मथना

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि कोई बात जब एक बार बिग़ड़ जाती है तो लाख कोशिश करने के बावजूद उसे ठीक नहीं किया जा सकता। यह वैसे ही है जैसे जब दूध एक बार फट जाये तो फिर उसको मथने से मक्खन नहीं निकलता। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें किसी भी बात को करने से पहले सौ बार सोचना चाहिए क्योंकि एक बार कोई बात बिगड़ जाए तो उसे सुलझाना बहुत मुश्किल हो जाता है।

9

रहिमन निज संपति बिन, कौ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय॥

शब्दार्थ : -

निज – अपना
बिपति – विपत्ति
सहाय – सहायता
जलज – कमल
रवि – सूर्य

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि जब आपके पास धन नहीं होता है तो कोई भी विपत्ति में आपकी सहायता नहीं करता। यह वैसे ही है जैसे यदि तालाब सूख जाता है तो कमल को सूर्य जैसा प्रतापी भी नहीं बचा पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आपका धन ही आपको आपकी मुसीबतों से निकाल सकता है क्योंकि मुसीबत में कोई किसी का साथ नहीं देता।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

शब्दार्थ : -

बड़ेन – बड़ा
लघु – छोटा
आवे – आना

व्याख्या -: रहीम जी कहते हैं कि किसी बड़ी चीज को देखकर किसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अर्थात बड़ी चीज़ के होने पर किसी छोटी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए। क्योंकि जहाँ छोटी चीज की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ सुई की जरूरत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी भी चीज़ को कम नहीं समझना चाहिए क्योंकि हर एक चीज़ का अपनी-अपनी जगह महत्त्व होता है।

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥

शब्दार्थ : -

बिनु – बगैर, बिना
सूम – असंभव

व्याख्या -: इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के के लिए लिया गया है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्र (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका जीवन जीना व्यर्थ हो जाता है।